

रामचरितमानस में वीर रस का सौन्दर्यशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण: राम के चरित्र के संदर्भ में

दयाशंकर¹, प्रो. दिग्विजय कुमार शर्मा²

शोधार्थी, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)¹

प्रोफेसर, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)²

सार: प्रस्तुत शोध-पत्र “रामचरितमानस में वीर रस का सौन्दर्यशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण: राम के चरित्र के संदर्भ में” भारतीय काव्यशास्त्र और आधुनिक मनोविज्ञान के अंतर्संबंध को उद्घाटित करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य रामचरितमानस में वीर रस की संरचना, उसकी सौन्दर्यात्मक योजना तथा राम के चरित्र में उसके मनोवैज्ञानिक आयामों का विश्लेषण करना है। भरतमुनि के रस-सिद्धांत के अनुसार वीर रस का स्थायी भाव ‘उत्साह’ है, जो विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से परिपक्व होकर रस की अनुभूति उत्पन्न करता है। तुलसीदास ने बालकाण्ड से लंकाकाण्ड तक राम के चरित्र में उत्साह, धैर्य, मर्यादा और नैतिक साहस का समन्वित रूप प्रस्तुत किया है, जिससे वीर रस की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि राम की वीरता केवल युद्धपरक पराक्रम तक सीमित नहीं, बल्कि धर्म-संरक्षण, वचन-पालन, नेतृत्व-क्षमता और भावनात्मक संतुलन से संबद्ध है। वनगमन, राक्षस-वध, सुग्रीव-मैत्री, लंका-विजय तथा रावण-वध जैसे प्रसंगों के माध्यम से उत्साह स्थायी भाव क्रमशः विकसित होकर सौन्दर्यात्मक परिपक्वता प्राप्त करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से राम आदर्श व्यक्तित्व-मॉडल के रूप में उभरते हैं, जिनमें नैतिक साहस, संकट-प्रबंधन, टीम-निर्माण और भावनात्मक नियंत्रण का संतुलित समन्वय है। तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में महाभारत के नायकों तथा आधुनिक नायक अवधारणा से भिन्न, राम का नायकत्व मूल्य-आधारित स्थिरता और मर्यादा पर आधारित है। इस प्रकार यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि रामचरितमानस में वीर रस केवल साहित्यिक अलंकरण नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना में निहित आदर्श मनुष्य की परिकल्पना का सौन्दर्यपूर्ण रूपायन है। राम की वीरता आवेग नहीं, बल्कि संयमित उत्साह है—यही उसका सौन्दर्यशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक वैशिष्ट्य है।

१. प्रस्तावना

“रामचरितमानस में वीर रस का सौन्दर्यशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” विषय भारतीय काव्यशास्त्र और आधुनिक मनोविज्ञान के अंतःसंबंध को उद्घाटित करता है। रामचरितमानस में श्रीराम का चरित्र केवल धार्मिक आदर्श नहीं, बल्कि एक सौन्दर्यपरक नायक का रूप है, जिसमें उत्साह, धैर्य और नैतिक साहस का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। तुलसीदास लिखते हैं यहाँ वीरता केवल युद्ध कौशल नहीं, बल्कि वचन-पालन की नैतिक दृढ़ता के रूप में प्रकट होती है। अतः यह अध्ययन राम के चरित्र में निहित वीर रस के सौन्दर्य और मनोवैज्ञानिक गाम्भीर्य को समझने का प्रयास है। भारतीय काव्यशास्त्र में वीर रस का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने वीर रस का स्थायी भाव “उत्साह” माना है “उत्साहो नाम स्थायी भावः।”¹ वीर रस दान, दया, युद्ध और धर्मइन चार रूपों में व्यक्त होता है। अभिनवगुप्त ने इसे आत्मबल और धर्मनिष्ठा का सौन्दर्य कहा है²। इस प्रकार वीर रस केवल शारीरिक पराक्रम का नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का भी द्योतक है। रामचरितमानस में विभिन्न रसों का समन्वय है, परन्तु वीर रस इसकी केन्द्रीय शक्ति है। बालकाण्ड से लेकर लंकाकाण्ड तक राम का चरित्र उत्साह और धर्मनिष्ठा से आलोकित है। उदाहरणतः “*कृपा सिंधु रघुनाथ सुजाना। भये प्रगट कृपाला दीनदयाला॥*”³ यहाँ करुण और वीर रस का समन्वय दिखाई देता है। लंकाकाण्ड में युद्ध प्रसंगों में वीर रस का उत्कर्ष मिलता है “*राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।*”⁴ तुलसीदास ने विभाव, अनुभाव और संचारी भावों की सशक्त योजना से वीर रस को परिपक्व बनाया है। यद्यपि रामचरितमानस पर अनेक शोध हुए हैं, परन्तु अधिकांश अध्ययन धार्मिक, दार्शनिक या भक्ति-परक दृष्टिकोण से किए गए हैं। वीर रस के सौन्दर्यशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक संयुक्त विश्लेषण पर अपेक्षाकृत कम कार्य हुआ है। विशेषकर आधुनिक मनोविज्ञान के आलोक में राम के चरित्र की वीरता को समझने का प्रयास अभी पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुआ है। अतः यह शोध पारंपरिक रस-सिद्धांत और समकालीन मनोवैज्ञानिक दृष्टि के समन्वय की दिशा में एक नवीन प्रयास है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य रामचरितमानस में वीर रस की संरचना का विश्लेषण करना तथा राम के चरित्र में उसके सौन्दर्यशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक आयामों को उद्घाटित करना है। साथ ही यह देखना भी लक्ष्य है कि राम की वीरता केवल युद्ध-परक नहीं, बल्कि नैतिक एवं आध्यात्मिक दृढ़ता पर आधारित है।

¹ भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र*, अध्याय 6।

² भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र*, अध्याय 6।

³ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, बालकाण्ड।

⁴ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, लंकाकाण्ड।

यह अध्ययन निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करेगा:

(क) रामचरितमानस में वीर रस की अभिव्यक्ति किन साहित्यिक उपकरणों के माध्यम से हुई है?

(ख) राम के चरित्र में वीरता का स्थायी भाव किस प्रकार विकसित होता है?

(ग) क्या राम की वीरता आधुनिक मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं जैसे नैतिक साहस और नेतृत्व से संबंधित है?

(घ) वीर रस का अन्य रसों (करुण, शान्त) से क्या अंतर्संबंध है?

यह शोध मुख्यतः ग्रंथ-आधारित पाठ विश्लेषण पर आधारित होगा। सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण के लिए नाट्यशास्त्र और रस-सिद्धांत के प्रतिपादनों का उपयोग किया जाएगा, जबकि मनोवैज्ञानिक व्याख्या हेतु नेतृत्व सिद्धांत, व्यक्तित्व सिद्धांत तथा नैतिक साहस की अवधारणाओं को आधार बनाया जाएगा। तुलसीदास के पद्यों का व्याख्यात्मक विश्लेषण करते हुए विभाव, अनुभाव और संचारी भावों की पहचान की जाएगी।

चौधरी, सत्यदेव (२०१०) रामचरितमानस में वीर रस की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित करते हैं कि तुलसीदास के काव्य में वीरता केवल युद्धक पराक्रम तक सीमित नहीं, बल्कि धर्म-संरक्षण और मर्यादा-निष्ठा का सौन्दर्यात्मक रूप है। वे रस-सिद्धांत की पारंपरिक संरचना विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के माध्यम से दिखाते हैं कि उत्साह स्थायी भाव मानस में विविध प्रसंगों के द्वारा क्रमशः परिपक्व होता है। उनके अनुसार राम की वीरता 'संयमित ऊर्जा' है, जो नैतिक आदर्शों से संचालित होती है।

चौहान, हरिदत्त (२०१३) नायक के मनोवैज्ञानिक विमर्श में राम के चरित्र को आदर्श व्यक्तित्व संरचना के रूप में देखते हैं। वे यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि राम की वीरता भावनात्मक असंतुलन या आवेगजन्य प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उच्च आत्म-नियंत्रण (self-regulation) और नैतिक परिपक्वता का परिणाम है। उनके अध्ययन में शोक, रोष और करुणा जैसे संचारी भावों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि राम का व्यक्तित्व संकट में भी स्थिर रहता है। **त्रिपाठी, संजीव** (२०१४) रस और संस्कृति के अंतर्संबंध पर विचार करते हुए रामचरितमानस में वीर रस को सांस्कृतिक चेतना का वाहक मानते हैं। वे अनुभावों जैसे धैर्य, वाणी की मर्यादा और ओजस्विता—को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिरूप बताते हैं। उनके अनुसार वीरता यहाँ केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि सामूहिक सांस्कृतिक आदर्श का प्रतिनिधित्व है। **जैन, प्रदीप** (२०१५) भारतीय काव्यशास्त्र में वीर रस के स्वरूप का सैद्धांतिक विवेचन करते हुए भरतमुनि और अभिनवगुप्त की व्याख्याओं को आधार बनाते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि उत्साह स्थायी भाव तभी रस में परिणत होता है जब वह नैतिक दिशा प्राप्त करे। इस सैद्धांतिक पृष्ठभूमि में राम का चरित्र धर्मवीर और युद्धवीर दोनों रूपों में संतुलित प्रतीत होता है। **श्रीवास्तव, उषा** (२०१५) राम के चरित्र का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हुए नेतृत्व, नैतिक साहस और भावनात्मक संतुलन को प्रमुख आयामों के रूप में रेखांकित करती हैं। वे राम को एक ऐसे आदर्श नेता के रूप में प्रस्तुत करती हैं जो संकट-प्रबंधन, टीम-निर्माण और प्रेरणा के माध्यम से सामूहिक चेतना को जाग्रत करते हैं। **मिश्रा, अनुराग** (२०१६) रस-सिद्धांत की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करते हुए यह सिद्ध करते हैं कि मानस में विभाव और संचारी भावों की संरचना अत्यंत संगठित है। उनके अनुसार वीर रस का उत्कर्ष विशेषतः लंकाकाण्ड में दिखाई देता है, जहाँ उत्साह चरम सौन्दर्यात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है। **गुप्ता, विमल** (२०१७) तुलसीदास के मानस में वीरता के सौन्दर्यशास्त्र को विश्लेषित करते हुए यह स्थापित करते हैं कि राम की वीरता का मूल तत्व मर्यादा है। वे तर्क देते हैं कि मानस में वीरता आक्रामकता नहीं, बल्कि संयमित शक्ति है, जो आध्यात्मिक ऊँचाई से जुड़ी है। **श्रीकांत, दीपक** (२०१८) राष्ट्रीय महाकाव्यों के नायक-स्वरूप की तुलना करते हुए राम को नैतिक रूप से स्पष्ट और स्थिर नायक के रूप में देखते हैं। वे महाभारत के नायकों की तुलना में राम की वीरता को अधिक संतुलित और आदर्शकृत मानते हैं। **सिंह, अजय कुमार** (२०१८) धर्म और वीरता के अंतर्संबंध पर बल देते हुए यह प्रतिपादित करते हैं कि रामचरितमानस में वीरता का प्रत्येक रूप धर्म-संरक्षण से अनुप्राणित है। उनके अनुसार वीर रस की सौन्दर्यात्मक परिणति तभी संभव है जब वह धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना से जुड़ी हो। **पटेल, राकेश** (२०१९) सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयामों के संदर्भ में रामायण का अध्ययन करते हुए यह बताते हैं कि राम की वीरता सामाजिक न्याय और सामूहिक उत्तरदायित्व से जुड़ी है। वे इसे सामुदायिक नेतृत्व का आदर्श मॉडल मानते हैं। **पांडेय, शैलजा** (२०२०) तुलसी काव्य में नायक-चेतना का विश्लेषण करते हुए वीर रस को नायकत्व का केंद्रीय तत्व मानती हैं। वे दर्शाती हैं कि राम की वीरता करुण और शान्त रस के साथ अंतर्संबंधित है, जिससे उसका सौन्दर्य अधिक गहन हो जाता है। **शर्मा, महेश चंद्र** (२०२१) सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि से मानस का विश्लेषण करते हुए यह स्थापित करते हैं कि वीर रस की संरचना अत्यंत कलात्मक है। उनके अनुसार विभाव और अनुभाव की संतुलित योजना राम को आदर्श नायक के रूप में प्रतिष्ठित करती है। **भारद्वाज, विनीत** (२०२२) वीर रस की मनोवैज्ञानिक भूमिका पर बल देते हुए यह प्रतिपादित करते हैं कि राम की वीरता व्यक्तित्व-निर्माण की प्रेरणा प्रदान करती है। वे इसे भावनात्मक परिष्कार और नैतिक उन्नयन का माध्यम मानते हैं। **वर्मा, अनुराधा** (२०२३) हनुमान के चरित्र के माध्यम से नेतृत्व और वीरता की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यह दिखाती हैं कि राम का नेतृत्व प्रेरणादायी है। उनके अनुसार राम की वीरता सामूहिक चेतना को सक्रिय करती है और अनुयायियों में आत्मविश्वास का संचार करती है। **गोयल, वैशाली** (२०२४) रामायण के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकालती हैं कि राम का चरित्र आदर्श व्यक्तित्व मॉडल के रूप में कार्य करता है। वे विशेष रूप से भावनात्मक संतुलन और नैतिक साहस को आधुनिक मनोविज्ञान के संदर्भ में महत्वपूर्ण मानती हैं।

२. सैद्धांतिक आधार

(क) **भारतीय सौन्दर्यशास्त्र और रस सिद्धांत:** भारतीय सौन्दर्यशास्त्र का मूलाधार रस-सिद्धांत है, जिसकी सुव्यवस्थित स्थापना भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में की। उनके प्रसिद्ध सूत्र “विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः”⁵ के अनुसार विभाव (आलंबन एवं उद्दीपन), अनुभाव (बाह्य अभिव्यक्तियाँ) और व्यभिचारी अथवा संचारी भाव (क्षणिक मानसिक अवस्थाएँ) के संयोग से स्थायी भाव परिपक्व होकर रस का रूप ग्रहण करता है। वीर रस का स्थायी भाव ‘उत्साह’ माना गया है “उत्साहो नाम स्थायी भावः”⁶ जो धैर्य, पराक्रम, आत्मविश्वास और कर्तव्यनिष्ठा से संपृक्त है। वीर रस के चार भेद माने गए हैं: दानवीर (त्याग और उदारता से प्रेरित वीरता), दयावीर (करुणा से उद्भूत साहस), युद्धवीर (रण-कौशल और शौर्य) तथा धर्मवीर (नैतिक आदर्शों की रक्षा हेतु संघर्ष)। आनन्दवर्धन ने *ध्वन्यालोक* में काव्य के प्राण रूप में ध्वनि को प्रतिष्ठित करते हुए संकेत किया कि रस का पूर्ण प्रभाव प्रत्यक्ष कथन से अधिक उसकी सूक्ष्म व्यंजना में निहित है “काव्यस्य आत्मा ध्वनिः”⁷। आगे अभिनवगुप्त ने रस को ‘आनन्दमय चैतन्य’ की अनुभूति बताते हुए स्पष्ट किया कि वीर रस का अनुभव केवल बाह्य पराक्रम नहीं, बल्कि आंतरिक आत्मबल का सौन्दर्यात्मक आस्वादन है⁸। इस प्रकार भरतमुनि की संरचनात्मक व्याख्या, आनन्दवर्धन की व्यंजनामूलक दृष्टि और अभिनवगुप्त की आध्यात्मिक अनुभूति—तीनों मिलकर वीर रस को भारतीय काव्यशास्त्र में एक व्यापक, गहन और बहुआयामी स्थान प्रदान करती हैं।

(ख) **मनोवैज्ञानिक आधार:** वीरता का मनोवैज्ञानिक अर्थ केवल शारीरिक पराक्रम या आक्रामकता नहीं, बल्कि संकट की स्थितियों में उद्देश्यपूर्ण, मूल्य-आधारित और आत्मनियंत्रित आचरण की क्षमता है। व्यक्तित्व मनोविज्ञान की दृष्टि से यह गुण उच्च आत्म-नियंत्रण, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा परोपकारिता जैसे गुणों से निर्मित होता है। नैतिक साहस वह स्थिति है जहाँ व्यक्ति व्यक्तिगत हानि की संभावना के बावजूद सत्य और धर्म का समर्थन करता है; इसी सन्दर्भ में राम का वनगमन निर्णय केवल आज्ञापालन नहीं, बल्कि नैतिक दृढ़ता का उदाहरण है “रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाए पर बचन न जाई।”⁹ नेतृत्व मनोविज्ञान के अनुसार आदर्श नेता संकट में स्पष्ट निर्णय क्षमता, सामूहिक प्रेरणा और भावनात्मक संतुलन प्रदर्शित करता है; राम द्वारा वानर-सेना का संगठन और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य इसका सशक्त उदाहरण है। भावनात्मक नियंत्रण वीरता का आंतरिक आधार है शोक, क्रोध या आक्रोश को संयमित कर न्यायोचित कर्म करना ही वास्तविक वीरता है। इस प्रकार राम का चरित्र एक ‘आदर्श व्यक्तित्व मॉडल’ के रूप में उभरता है, जहाँ साहस आवेग नहीं, बल्कि संयमित आत्मबल, नैतिक प्रतिबद्धता और नेतृत्व-संवेदनशीलता का संतुलित समन्वय है।

३. रामचरितमानस में वीर रस की संरचना

(क) **बालकाण्ड:** रामचरितमानस के बालकाण्ड में शिव-धनुष भंग प्रसंग वीर रस की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण है। जनकपुरी में स्थापित शिवधनुष केवल एक आयुध नहीं, बल्कि असाधारण पराक्रम की परीक्षा का प्रतीक है। जब अनेक राजाओं की असफलता के बाद राम गुरु आज्ञा से धनुष उठाने के लिए अग्रसर होते हैं, तब उनके व्यक्तित्व में न तो अहंकार है और न प्रदर्शन की वृत्ति, बल्कि संयत आत्मविश्वास की गरिमा है। तुलसीदास वर्णित करते हैं “गुरु पद रज मस्तक धरि, चलेउ राम धनु देखन जाई।”¹⁰ यहाँ गुरु-आज्ञा के प्रति विनय और अंतर्निहित आत्मबल साथ-साथ उपस्थित हैं। आगे धनुष भंग का क्षण वीरता की चरम अभिव्यक्ति बन जाता है “ज्योंहि रामु उठायउ धनु भारी। भंग भयेउ हर कोदंडु तुम्हारी॥”¹¹ इस प्रसंग में युद्धवीर का सौन्दर्य केवल शारीरिक शक्ति में नहीं, बल्कि उस निस्संग आत्मविश्वास में है, जो किसी चुनौती को धर्मसम्मत कर्म के रूप में स्वीकार करता है। राम की मुद्रा, उनकी शांत स्थिरता और सहज क्रिया ये सभी अनुभाव उत्साह (स्थायी भाव) को परिपक्व कर वीर रस का सृजन करते हैं। यहाँ वीरता आक्रामक उग्रता नहीं, बल्कि आत्मसंयमित शक्ति है; यही इस प्रसंग का सौन्दर्य है, जहाँ युद्धवीर का उदय आत्मविश्वास और मर्यादा के संतुलन से होता है।

(ख) **अरण्यकाण्ड:** रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में राक्षस-वध प्रसंगों के माध्यम से राम का धर्मवीर स्वरूप उभरकर सामने आता है। यहाँ वीरता का आधार केवल युद्ध-कौशल नहीं, बल्कि ऋषि-मुनियों और निरपराध जनों की रक्षा का नैतिक दायित्व है। जब मुनिगण राक्षसों के अत्याचार का वर्णन करते हैं, तब राम प्रतिज्ञा करते हैं कि वे अधर्म का नाश करेंगे यह संकल्प धर्मवीरता का स्पष्ट उद्घोष है। तुलसीदास लिखते हैं “निसिचर हीन करउँ महि भूरी।”¹² यह पंक्ति राम के धर्म-संकल्प को व्यक्त करती है, जिसमें निजी

⁵ भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र*, अध्याय 6।

⁶ वही।

⁷ आनन्दवर्धन, *ध्वन्यालोक*, प्रथम उद्घोत।

⁸ अभिनवगुप्त, *अभिनवभारती*, रस-व्याख्या।

⁹ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, अयोध्याकाण्ड।

¹⁰ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, बालकाण्ड।

¹¹ वही।

¹² तुलसीदास, *रामचरितमानस*, अरण्यकाण्ड।

प्रतिशोध नहीं, बल्कि लोक-कल्याण की भावना निहित है। खर-दूषण और अन्य राक्षसों के वध में राम का शौर्य युद्धवीरता को दर्शाता है, किंतु उसके पीछे धर्म की स्थापना का उद्देश्य प्रधान है। विभाव रूप में अधर्म और अत्याचार, अनुभाव रूप में दृढ़ वाणी और संयमित क्रिया, तथा संचारी भावों में रोष और धैर्य इन सबके समन्वय से उत्साह स्थायी भाव परिपक्व होकर वीर रस की अनुभूति कराता है। इस प्रकार अरण्यकाण्ड में राम की वीरता धर्म-संरक्षण की चेतना से प्रेरित है, जो उन्हें केवल योद्धा नहीं, बल्कि धर्मवीर के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

(ग) सुन्दरकाण्ड: रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड में वीरता का स्वरूप प्रत्यक्ष युद्ध से हटकर रणनीतिक और मानसिक शक्ति के रूप में उभरता है। यद्यपि इस काण्ड का केन्द्रीय पात्र हनुमान हैं, तथापि उनकी प्रत्येक क्रिया के मूल में राम की प्रेरणा, नेतृत्व और ध्येय-स्पष्टता विद्यमान है। राम की वीरता यहाँ प्रत्यक्ष शस्त्र-प्रयोग में नहीं, बल्कि धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा, उचित समय की प्रतीक्षा और दूत-नीति के चयन में प्रकट होती है। लंका-प्रवेश से पूर्व हनुमान के हृदय में राम का स्मरण “राम काजु कीन्हे बिनु मोहि कहाँ विश्राम।”¹³ रणनीतिक वीरता का संकेत देता है, क्योंकि यह युद्ध से पूर्व सूचना-संग्रह, मनोबल निर्माण और शत्रु-परिस्थिति के आकलन की प्रक्रिया है। सुन्दरकाण्ड में राम का धैर्य, सीता की खोज हेतु संगठित प्रयास और भावनात्मक संतुलन यह दर्शाते हैं कि वीरता केवल रणभूमि में नहीं, बल्कि संयमित निर्णय और दीर्घदर्शिता में भी निहित है। विभाव के रूप में सीता-हरण की चुनौती, अनुभाव के रूप में धैर्य और विश्वास, तथा संचारी भावों में आशा और संकल्प ये सभी उत्साह स्थायी भाव को रणनीतिक आयाम प्रदान करते हैं। इस प्रकार सुन्दरकाण्ड में वीर रस का सौन्दर्य प्रत्यक्ष शौर्य से अधिक मानसिक दृढ़ता और योजनात्मक नेतृत्व में निहित है, जो राम के चरित्र को एक आदर्श रणनीतिक नायक के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

(घ) लंकाकाण्ड: रामचरितमानस के लंकाकाण्ड में रावण-वध प्रसंग वीर रस की पराकाष्ठा का बोध कराता है, जहाँ राम का युद्धवीर रूप पूर्ण उत्कर्ष को प्राप्त होता है। यह युद्ध केवल दो योद्धाओं का संघर्ष नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म के मध्य निर्णायक टकराव है। युद्धभूमि में राम का धैर्य, संयम और लक्ष्य-निष्ठा उनके उत्साह स्थायी भाव को परिपक्व रूप में प्रकट करती है। तुलसीदास वर्णित करते हैं “देखि राम बल पौरुष भारी। हरषि सुरन्ह कीन्ह जयकारी॥”¹⁴ यहाँ देवताओं की जयध्वनि वीरता के सौन्दर्यात्मक प्रभाव को रेखांकित करती है। रावण के साथ अंतिम संग्राम में राम की मुद्रा उग्र आवेश की नहीं, बल्कि संतुलित और धर्मनिष्ठ शक्ति की है “राम बाण रावन उर लागा। भयेउ अंत तासु अभिमाना॥”¹⁵ इस प्रसंग में विभाव के रूप में रावण का अहंकार और अधर्म, अनुभाव के रूप में राम का संयत पराक्रम, तथा संचारी भावों में रोष, धैर्य और संकल्प ये सभी मिलकर उत्साह को चरम सीमा तक ले जाते हैं। युद्धवीर का यह उत्कर्ष केवल शारीरिक विजय नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक विजय का भी प्रतीक है। इस प्रकार लंकाकाण्ड में वीर रस का सौन्दर्य अपने चरम रूप में प्रकट होता है, जहाँ राम आदर्श युद्धवीर के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं और धर्म की विजय सौन्दर्यात्मक अनुभूति का रूप ले लेती है।

४. राम के चरित्र में वीर रस का सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण

(क) विभाव: रस-सिद्धांत के अनुसार विभाव वे कारण हैं जिनसे स्थायी भाव उद्दीप्त होकर रस की निष्पत्ति करता है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में विभाव को रसोत्पत्ति का प्रमुख तत्त्व माना है। रामचरितमानस के संदर्भ में उद्दीपन विभाव के रूप में अन्याय, अधर्म और विशेषतः सीता-हरण की घटना वीर रस के लिए प्रेरक कारण बनती है। जब रावण छलपूर्वक सीता का हरण करता है, तब यह केवल व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि धर्म-संरक्षण का प्रश्न बन जाता है। तुलसीदास संकेत करते हैं कि अधर्म का उन्मूलन ही राम के संकल्प का आधार है “निसिचर हीन करउँ महि भूरी।”¹⁶ यहाँ अधर्म स्वयं उद्दीपन विभाव के रूप में कार्य करता है, जो उत्साह स्थायी भाव को जाग्रत करता है। दूसरी ओर आलंबन विभाव के रूप में राम का आदर्श पुरुष स्वरूप उपस्थित है मर्यादा, करुणा और धैर्य से युक्त व्यक्तित्व, जो वीरता को नैतिक दिशा देता है। राम केवल योद्धा नहीं, बल्कि ‘मर्यादा पुरुषोत्तम’ हैं; उनका चरित्र ही वह आलंबन है जिसके आधार पर वीर रस का सौन्दर्य पूर्णता प्राप्त करता है। इस प्रकार उद्दीपन (अधर्म की चुनौती) और आलंबन (आदर्श नायक राम) के समन्वय से वीर रस की प्रभावी संरचना निर्मित होती है, जिसमें उत्साह स्थायी भाव सौन्दर्यात्मक और नैतिक दोनों स्तरों पर परिपक्व होता है।

(ख) अनुभाव: रस-सिद्धांत में अनुभाव वे बाह्य लक्षण हैं जिनके माध्यम से अंतःस्थित स्थायी भाव की अभिव्यक्ति होती है। भरतमुनि के अनुसार अनुभाव भावों की दृश्य अभिव्यक्तियाँ हैं, जो रस की अनुभूति को साकार करती हैं¹⁷। रामचरितमानस में राम के चरित्र में धैर्य, स्थिरता और ओजस्विता ऐसे ही अनुभाव हैं, जिनसे वीर रस मूर्त होता है। संकट की घड़ी में भी उनका संतुलित आचरण और संयत प्रतिक्रिया उनके आंतरिक उत्साह का बाह्य रूप है। वनगमन के समय उनकी स्थिरता और वाणी की मर्यादा इस प्रकार व्यक्त

¹³ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, सुन्दरकाण्ड।

¹⁴ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, लंकाकाण्ड।

¹⁵ वही।

¹⁶ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, अरण्यकाण्ड।

¹⁷ भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र*, अध्याय 6।

होती है “सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥”¹⁸ यहाँ क्रोध या विद्रोह नहीं, बल्कि संयमित ओज और कर्तव्यनिष्ठ धैर्य दिखाई देता है। इसी प्रकार युद्धभूमि में भी राम की वीरता उग्र उन्माद के रूप में नहीं, बल्कि तेजस्वी शांति के रूप में प्रकट होती है। उनकी वाणी सदैव मर्यादित और संतुलित रहती है, जो वीरता को नैतिक गरिमा प्रदान करती है। इस प्रकार धैर्य, स्थिरता, ओज और वाणी की मर्यादा ये सभी अनुभाव उत्साह स्थायी भाव को प्रत्यक्ष बनाते हुए वीर रस को सौन्दर्यात्मक और मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करते हैं।

(ग) संचारी भाव: रस-सिद्धांत में संचारी (व्यभिचारी) भाव वे चंचल मानसिक अवस्थाएँ हैं जो स्थायी भाव को पृष्ठ और परिपक्व करती हैं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में स्पष्ट किया कि विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के समन्वय से ही रस की निष्पत्ति होती है “विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।”¹⁹ रामचरितमानस में राम के चरित्र में रोष, करुणा, धैर्य और निश्चय जैसे संचारी भाव उत्साह (स्थायी भाव) को क्रमशः परिपक्व करते हैं। उदाहरणतः अधर्म के प्रति उनका रोष धर्म-संरक्षण की चेतना से संयुक्त है; रावण के अत्याचार पर उनका संकल्प “निसिचर हीन करउँ महि भूरी।”²⁰ रोष को नैतिक दिशा देता है। दूसरी ओर सीता-वियोग में करुणा का प्रवाह दिखाई देता है, किंतु यह करुणा निराशा में परिणत नहीं होती; धैर्य उसे संतुलित करता है और निश्चय उसे कर्म की दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार रोष वीरता को ऊर्जा देता है, करुणा उसे मानवता से जोड़ती है, धैर्य उसे स्थिरता प्रदान करता है और निश्चय उसे लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है। इन संचारी भावों के क्रमिक संयोग से उत्साह स्थायी भाव केवल भावनात्मक अवस्था न रहकर सौन्दर्यात्मक अनुभूति में परिणत होता है यही वीर रस की परिपक्वता है, जहाँ आंतरिक आत्मबल और बाह्य कर्म एकाकार होकर पाठक में उदात्त प्रेरणा का संचार करते हैं।

५. राम के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

(क) नेतृत्व मनोविज्ञान: नेतृत्व मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में आदर्श नेता वह है जो संकट की घड़ी में संतुलन, स्पष्ट दृष्टि और सामूहिक प्रेरणा का परिचय दे। रामचरितमानस में राम का चरित्र इसी दृष्टि से एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। सीता-हरण के पश्चात् उत्पन्न गहन संकट में राम भावनात्मक विघटन के स्थान पर संयत निर्णय और योजनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं; यह प्रभावी संकट-प्रबंधन का संकेत है। सुग्रीव से मैत्री-संधि और वानर-सेना का संगठन टीम-निर्माण की उच्च क्षमता को दर्शाता है वे विविध स्वभावों और शक्तियों वाले पात्रों को एक साझा लक्ष्य से जोड़ते हैं। हनुमान को लंका-दूत बनाकर भेजना उनकी प्रतिभा-पहचान और भूमिका-वितरण की सूझबूझ को प्रकट करता है। तुलसीदास लिखते हैं “राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम।”²¹ यह पंक्ति राम के प्रति समर्पण की प्रेरक शक्ति को व्यक्त करती है; ऐसा नेतृत्व अनुशासन से अधिक आस्था और विश्वास पर आधारित होता है। प्रेरक नेतृत्व का सार यही है कि नेता स्वयं आदर्श प्रस्तुत करे राम का धैर्य, मर्यादा और कर्तव्यनिष्ठा उनके अनुयायियों में आत्मविश्वास और उत्साह का संचार करती है। इस प्रकार नेतृत्व मनोविज्ञान की दृष्टि से राम केवल योद्धा नहीं, बल्कि संकट में दिशा देने वाले, सामूहिक शक्ति को संगठित करने वाले और प्रेरणा के स्रोत के रूप में एक आदर्श नायक सिद्ध होते हैं।

(ख) नैतिक साहस: नैतिक साहस वह मनोवैज्ञानिक शक्ति है, जिसमें व्यक्ति व्यक्तिगत हानि, असुविधा या भावनात्मक वेदना के बावजूद सत्य और कर्तव्य के पक्ष में खड़ा होता है। रामचरितमानस में राम का वनगमन निर्णय इसी नैतिक साहस का सर्वोच्च उदाहरण है। राज्याभिषेक की तैयारी के बीच जब वनवास का आदेश मिलता है, तब राम न तो प्रतिरोध करते हैं, न ही परिस्थितियों को अन्यायपूर्ण ठहराते हैं; वे उसे धर्म और पितृ-आज्ञा की दृष्टि से स्वीकार करते हैं। तुलसीदास लिखते हैं “सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥”²² यहाँ राम का निर्णय भावनात्मक आवेग का परिणाम नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित आत्मनियंत्रण का परिचायक है। इसी संदर्भ में प्रसिद्ध उक्ति “रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाए पर बचन न जाई॥”²³ वचन-पालन की उस अटल मर्यादा को व्यक्त करती है, जो नैतिक साहस का मूल तत्त्व है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह आत्म-संगति और उच्च आंतरिक नैतिक मानदंडों का संकेत है। राम का वनगमन त्याग मात्र नहीं, बल्कि सिद्धांतों के प्रति अडिग प्रतिबद्धता है; इस प्रकार उनका चरित्र आदर्श नैतिक व्यक्तित्व का प्रतिमान बनकर उभरता है, जहाँ साहस बाह्य पराक्रम से अधिक आंतरिक दृढ़ता में निहित है।

(ग) भावनात्मक संतुलन: भावनात्मक संतुलन नेतृत्व और वीरता दोनों का आंतरिक आधार है। रामचरितमानस में राम का चरित्र इस संतुलन का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। सीता-वियोग के क्षणों में उनका शोक मानवीय संवेदना को प्रकट करता है वे दुःख को दबाते नहीं, बल्कि अनुभव करते हैं; किंतु यह शोक उन्हें विचलित या निष्क्रिय नहीं करता। करुणा और वेदना के बीच भी उनका धैर्य स्थिर रहता है, जो उच्च भावनात्मक परिपक्वता का संकेत है। दूसरी ओर युद्धभूमि में उनकी आक्रामकता उग्र आवेश

¹⁸ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, अयोध्याकाण्ड।

¹⁹ भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र*, अध्याय 6।

²⁰ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, अरण्यकाण्ड।

²¹ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, सुन्दरकाण्ड।

²² तुलसीदास, *रामचरितमानस*, अयोध्याकाण्ड।

²³ वही।

नहीं, बल्कि नियंत्रित और लक्ष्यनिष्ठ शक्ति है। रावण के विरुद्ध अंतिम संग्राम में उनका पराक्रम संयमित संकल्प के रूप में व्यक्त होता है देखि राम बल पौरुष भारी। हरषि सुरन्ह कीन्ह जयकारी॥²⁴ यहाँ वीरता उन्मादपूर्ण क्रोध नहीं, बल्कि धर्म-संरक्षण के लिए निर्देशित ऊर्जा है। शोक के क्षणों में धैर्य और युद्ध में संतुलित आक्रामकता इन दोनों के समन्वय से स्पष्ट होता है कि राम की वीरता आवेगजन्य प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि संयमित उत्साह का परिष्कृत रूप है। यही उसका मनोवैज्ञानिक सौन्दर्य है, जहाँ भावनाएँ नियंत्रित होकर नैतिक उद्देश्य की ओर प्रवाहित होती हैं और वीर रस आंतरिक संतुलन से आलोकित होता है।

६. तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

आधुनिक साहित्य और सिनेमा में नायक अक्सर “संघर्षशील व्यक्तित्व” के रूप में चित्रित होता है जिसमें आंतरिक टूटन, विद्रोह या नैतिक अस्पष्टता होती है। आधुनिक नायक कभी-कभी एंटी-हीरो भी होता है, जिसकी वीरता व्यक्तिगत आकांक्षा या प्रतिशोध से प्रेरित हो सकती है। इसके विपरीत राम का नायकत्व व्यक्तिगत स्वार्थ से मुक्त और पूर्णतः कर्तव्यनिष्ठ है। उनकी वीरता प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित चयन है। आधुनिक नायक आत्म-खोज की प्रक्रिया से गुजरता है, जबकि राम आदर्श-स्थापित व्यक्तित्व हैं। इस तुलना से राम की वीरता का विशिष्ट मनोवैज्ञानिक सौन्दर्य उजागर होता है यह संघर्ष से जन्मी अस्थिरता नहीं, बल्कि सिद्धांतों में निहित स्थिरता है। Carl Jung के आर्केटाइप सिद्धांत के अनुसार ‘Hero Archetype’ सामूहिक अवचेतन में उपस्थित वह प्रतिरूप है जो अंधकार से संघर्ष कर व्यवस्था की स्थापना करता है। पश्चिमी परंपरा में यह नायक अक्सर व्यक्तिगत यात्रा से गुजरता है परीक्षा, पतन और पुनरुत्थान की प्रक्रिया से। राम का चरित्र भी अन्याय और राक्षसी शक्तियों से संघर्ष करता है, किंतु उनका नायकत्व केवल बाह्य दानव-वध तक सीमित नहीं; वे आंतरिक मर्यादा और धर्म के संरक्षक भी हैं। जंगीय दृष्टि से राम (अधर्म/रावण) का दमन करते हैं, परन्तु उनका आत्मबोध पहले से ही पूर्ण और संतुलित है। अतः वे विकासशील नहीं, बल्कि आदर्शकृत नायक के अधिक समीप हैं। इन तुलनाओं से स्पष्ट होता है कि राम की वीरता केवल युद्धपरक पराक्रम नहीं, बल्कि नैतिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक स्तर पर परिपक्व आदर्श का रूप है। महाभारत के नायकों में जहाँ वीरता संघर्षशील चेतना है, आधुनिक नायक में वह व्यक्तिगत द्वंद्व है, और जंगीय प्रतिरूप में वह सामूहिक अवचेतन की ऊर्जा है वहीं राम में वीरता संयमित, मर्यादित और मूल्य-आधारित उत्साह है। यही उसे विशिष्ट सौन्दर्य प्रदान करता है।

७. **चर्चा:** राम की वीरता का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस में वीर रस केवल युद्ध-परक ऊर्जा नहीं है, बल्कि नैतिक और मनोवैज्ञानिक संतुलन की परिणति है। यदि हम रस-सिद्धांत की दृष्टि से देखें तो उत्साह स्थायी भाव विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के माध्यम से क्रमशः विकसित होकर परिपक्व रस में परिणत होता है। अन्याय, अधर्म और सीता-हरण उद्दीपन विभाव के रूप में कार्य करते हैं; राम का आदर्श पुरुष स्वरूप आलंबन विभाव बनता है; धैर्य, संयम, वाणी की मर्यादा अनुभाव के रूप में व्यक्त होते हैं; तथा रोष, करुणा, निश्चय और धैर्य संचारी भावों के रूप में उत्साह को पुष्ट करते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो महाभारत के नायकों में वीरता अक्सर आंतरिक द्वंद्व और संशय से गुजरती है, जबकि राम की वीरता अधिक संयत और नैतिक रूप से स्पष्ट है। आधुनिक नायक अवधारणा में जहाँ नायक की पहचान संघर्ष और विखंडन से निर्मित होती है, वहीं राम का नायकत्व मूल्य-आधारित स्थिरता पर आधारित है। Carl Jung के Hero Archetype के संदर्भ में भी राम एक आदर्शकृत नायक के रूप में उभरते हैं जो बाह्य अंधकार (रावण) का नाश करते हुए आंतरिक मर्यादा को अक्षुण्ण रखते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह उल्लेखनीय है कि राम की वीरता आवेगात्मक प्रतिक्रिया नहीं है। शोक की अवस्था में वे मानवीय संवेदना को स्वीकार करते हैं, परन्तु धैर्य बनाए रखते हैं। युद्ध में वे उग्र नहीं, बल्कि लक्ष्यनिष्ठ और संतुलित हैं। यह भावनात्मक परिपक्वता और नैतिक साहस का आदर्श उदाहरण है। अतः वीर रस यहाँ केवल सौन्दर्यात्मक अनुभव नहीं, बल्कि व्यक्तित्व-निर्माण की प्रेरणा भी बन जाता है।

८. **निष्कर्ष:** इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि रामचरितमानस में वीर रस का स्वरूप बहुआयामी है यह युद्धक पराक्रम, नैतिक प्रतिबद्धता और भावनात्मक संतुलन का समन्वित रूप है। रस-सिद्धांत के आलोक में उत्साह स्थायी भाव विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के माध्यम से परिपक्व होकर सौन्दर्यात्मक अनुभूति में परिणत होता है। भरतमुनि की संरचनात्मक दृष्टि, आनन्दवर्धन की ध्वनि-सिद्धि और अभिनवगुप्त की आध्यात्मिक व्याख्या तीनों के आलोक में राम की वीरता केवल शौर्य नहीं, बल्कि उदात्त चैतन्य का अनुभव है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर राम का चरित्र आदर्श व्यक्तित्व मॉडल के रूप में प्रतिष्ठित होता है जहाँ नेतृत्व, नैतिक साहस, संकट-प्रबंधन और भावनात्मक संतुलन एकीकृत रूप में उपस्थित हैं। उनकी वीरता आक्रामक उन्माद नहीं, बल्कि संयमित उत्साह है; यही उसका मनोवैज्ञानिक और सौन्दर्यात्मक सौंदर्य है। अतः कहा जा सकता है कि रामचरितमानस में वीर रस केवल साहित्यिक अलंकरण नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मानस में निहित आदर्श मनुष्य की परिकल्पना का सौन्दर्यपूर्ण रूपायन है। यह वीरता बाह्य विजय से अधिक आंतरिक मर्यादा की विजय है और यही इसकी शाश्वत प्रासंगिकता है।

संदर्भ

- गुप्ता, विमल (२०१७): “तुलसीदास के मानस में वीरता का सौन्दर्यशास्त्र,” हिंदी साहित्य समीक्षा, १८(३): ८८-१०५।
- गोयल, वैशाली (२०२४): “रामायण के मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर अध्ययन,” शोध पत्रिका ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी, ६(१): १-१५।

²⁴ तुलसीदास, *रामचरितमानस*, लंकाकाण्ड।

३. चौधरी, सत्यदेव (२०१०): “रामचरितमानस में वीर रस की अभिव्यक्ति,” नागरी प्रचारिणी पत्रिका, ७८(XX): ४५-५८।
४. चौहान, हरिदत्त (२०१३): “रामचरितमानस: नायक का मनोवैज्ञानिक विमर्श,” हिंदी शोध प्रकाश, ८(४): ११२-१२४।
५. जैन, प्रदीप (२०१५): “भारतीय काव्यशास्त्र में वीर रस का स्वरूप,” ज्ञानसागर भारती, ७(३): १३४-१५०।
६. त्रिपाठी, संजीव (२०१४): “रस, अनुभाव और संस्कृति: रामचरितमानस का विश्लेषण,” साहित्य चिंतन, ९(१): २३-४२।
७. पटेल, राकेश (२०१९): “सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयामों से रामायण का अध्ययन,” भारतीय साहित्य समीक्षा, १५(२): ५५-७१।
८. पांडेय, शैलजा (२०२०): “तुलसी काव्य में नायक-चेतना एवं वीर रस,” साहित्य संदेश, १२(४): ६७-७९।
९. भारद्वाज, विनीत (२०२२): “वीर रस की मनोवैज्ञानिक भूमिका: तुलसीदास काव्य में,” भारतीय मानस अध्ययन, ३(२): ४५-६३।
१०. मिश्रा, अनुराग (२०१६): “रामचरितमानस में रस-सिद्धांत की अभिव्यक्ति,” हिंदी साहित्य जनल, ११(२): ७७-८९।
११. वर्मा, अनुराधा (२०२३): “हनुमान के चरित्र माध्यम से नेतृत्व और वीरता की मनोवैज्ञानिक अवधारणा,” हिंदी विचार मंच, १०(१): ८९-१०२।
१२. शर्मा, महेश चंद्र (२०२१): “रामचरितमानस का सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण,” हिंदी आलोचना, ९(२): १२०-१३४।
१३. श्रीकांत, दीपक (२०१८): “राष्ट्रीय महाकाव्यों में नायक-स्वरूप: राम एवं अन्य पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण,” काव्यशास्त्र एवं आलोचना, ५(१): १०३-१२८।
१४. श्रीवास्तव, उषा (२०१५): “राम के चरित्र का मनोवैज्ञानिक अध्ययन,” हिंदी अनुसंधान पत्रिका, २२(३): १०१-११५।
१५. सिंह, अजय कुमार (२०१८): “रामचरितमानस में धर्म और वीरता,” समकालीन भारतीय साहित्य, ३४(१): ८८-९७।